नई दुनिया
नई सोच, नया अंदाज
इंदौर, भोपाल (नवदुनिया), जबलपुर, ग्वालियर, रायपुर और बिलासपुर से एक साथ प्रकाशित
naidunia.com

को अब प्रमाण देने की जरूरत नहीं, जिन्हें चोट लगी है, उन्होंने दिया प्रमाण 7 डोनाल्ड ट्रंप ने अब पुतिन को सनकी बताया 11

नई पीढ़ी को किताबों से जोड़ने का प्रयास, पांच हजार पुस्तकालय तैयार

अच्छी पहल ● अभियान के माध्यम से पुस्तकालय बनाने के लिए कर रहे प्रेरित

इंदौर साहित्य का धनी शहर है। इस शहर ने देश को कई प्रसिद्ध साहित्यकार दिए हैं। वहीं, अगली पीढ़ी भी किताबों से नाता जोड़े और पठन-पाठन का सिलसिला चलता रहे इसके लिए कई संस्थाओं द्वारा तरह-तरह के प्रयास किए जा रहे हैं। इसी क्रम में एक प्रयास लाइब्रेरी शुरू करने का किया जा रहा है। इसके अंतर्गत बच्चों के लिए घर में लाइब्रेरी या किताब कोना बनाने के लिए लोगों को प्रेरित किया जा रहा है। यह पहल अब रंग भी लाने लगी है और युवाओं से लेकर कई लेखकों ने भी अपने घरों में छोटी-छोटी लाइब्रेरी और किताब कोना बनाना शुरू कर दिया है। यह अभियान इंदौर के साथ ही देश के अन्य हिस्सों में भी चलाया जा रहा है। जहां भी प्रयास के सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं।

नईदुनिया प्रतिनिधि, इंदौर: 'घर-घर पुस्तकालय अभियान' इंदौर के साथ ही दिल्ली, अयोध्या, भोपाल और रायपुर सहित अन्य शहरों में चलाई जा रही है। यह अभियान मातृभाषा उत्तयन संस्थान द्वारा शुरू किया गया था। संस्था के संस्थापक अर्पण जैन ने बताया कि इस अभियान की शुरुआत दस दिन पूर्व की गई थी। अभियान का उद्देश्य बच्चों और बड़ों को किताबों से जोड़ना है। इसके लिए देशभर में अभियान शुरू किया। संस्था के सदस्य साहित्यप्रेमियों और विद्यार्थियों तक पहुंचे और उन्हें घर में ही पुस्तकालय अथवा किताब कोना बनाने के लिए प्रेरित किया गया। उनसे कहा गया कि वे अपने पास मौजूद किताबों को एक जगह संग्रहित कर छोटी लाइब्रेरी तैयार करें या घर के किसी कोने में किताबों को



अभियान के अंतर्गत तैयार पुस्तकालय। ● सौजन्य



अभियान के अंतर्गत बनाया गया किताब कोना। ● सौजन्य

अब तक इंदौर में करीब 1250 पुस्तकालय तैयार

इस अभियान के सार्थक परिणाम अब दिखाई देने लगे हैं। महज 10 दिन में विभिन्न शहरों में किताबप्रेमी घरों में 5 हजार पुस्तकालय तैयार कर चुके हैं। इंदौर में यह संख्या करीब 1250 है। अभियान लगातार जारी है। अर्पण जैन ने बताया कि अभियान के माध्यम से पाठकों के पास मौजूद किताबों को संग्रहित करने के लिए तो प्रेरित किया ही जाता है। इसके साथ ही ऐसे पाठक जिनके पास किताबें नहीं है, उन्हें संस्था जाती है। वे बताते है कि संस्था के पास करीब 50 हजार किताबों का कलेक्शन जिसमें से दो से ढाई हजार मूल्य की किताब का सेट बनाकर निशुल्क दिया जाता है।

इसके साथ ही विभिन्न प्रकाशकों के साथ अनुबंध भी किया गया है, जहां से पाठकों को 25 प्रतिशत डिस्काउंट मिलता है। पुस्तकालय में किताबों की संख्या की कोई सीमा नहीं है। पाठक अपने पसंद के विषयों की किताबें

शासकीय महाविद्यालय में शिक्षक डा. अखिलेश राव ने बताया कि उन्होंने अभियान से जुड़कर करीब करीब 400 किताबों का पुस्तकालय बनाया है। पहले ये किताबें एक शेल्फ में रखी थी। वहां से उन्हें निकालकर घर में एक पुस्तकालय बनाया और इसे सजाया। ताकि बच्चे किताब पढ़ने के लिए प्रेरित हों।

भावना शर्मा ने बताया कि उनके पास करीब करीब साढ़े दस हजार पुस्तकें थे। उन्होंने इन किताबों को एक स्थान पर संग्रहित कर पुस्तकालय तैयार किया। इसमें अधिकतर साहित्य और नैतिक शिक्षा से जुड़ी किताबें शामिल हैं। वे बताती है कि अब वे ये किताबें बच्चों को पढ़ने के लिए देती है।

मणिमाला शर्मा ने बताया कि वे सेवानिवृत शिक्षिका है। उनके पास पुरस्कार में मिली, उनके द्वारा खरीदी और अन्य लोगों से प्राप्त किताबें मौजूद थी। इन किताबों को उन्होंने एक स्थान पर संग्रहित कर पुस्तक कोना बनाया है। इस पुस्तकालय में करीब 50 किताबें हैं, जिसमें साहित्य और धर्म से जुड़ी किताबें शामिल हैं।

किर्ती मेहता ने 100 से 150 किताबों का पुस्तकालय तैयार किया है। इसमें हिंदी के कई लेखकों की पुस्तकों का संग्रह शामिल हैं। इसके साथ ही नए लेखकों की पुस्तकों को भी शामिल किया गया है। उन्होंने बताया कि फिलहाल ये पुस्तकालय छोटे स्वरूप में है। इसे बड़ा बनाने की भी